

# दानिएल की पुस्तक - संख्या एक सौ इक्कीस

अंतिम दिनों के संकेतों का उद्घाटन: वसंत में कौपलें फूटते पेड़ों की ओर मसीह के संकेतों को समझना

Jeff Pippenger

2024-03-07

मसीह ने अपने लोगों का ध्यान वसंत में कौपलें फूटते पेड़ों की ओर दिलाया, ताकि वे अंतिम दिनों के "चिन्ह" और उन "चिन्हों" के निहितार्थ को समझ सकें।

मसीह ने अपनी प्रजा को अपने आगमन के चिन्हों पर ध्यान रखने और जब वे अपने आने वाले राजा के संकेत देखें तो आनंदित होने की आज्ञा दी थी। 'जब ये बातें होने लगे,' उन्होंने कहा, 'तो ऊपर देखो, और अपने सिर उठाओ; क्योंकि तुम्हारा उद्धार निकट है।' उन्होंने अपने अनुयायियों का ध्यान वसंत ऋतु में कौपलें निकालते पेड़ों की ओर दिलाया, और कहा: 'जब वे अब कौपलें निकालते हैं, तो तुम स्वयं देखते और जान लेते हो कि अब ग्रीष्म निकट है। उसी प्रकार तुम भी, जब तुम इन बातों को घटित होते देखो, तो जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट है।' लूका 21:28, 30, 31। महान विवाद, 308.

अंतिम दिनों के "चिन्ह" उन "चिन्हों" द्वारा प्रतीकित थे, जिन्होंने प्रथम स्वर्गदूत के आंदोलन की घोषणा की और उसे आरंभ कराया। उन "चिन्हों" में आकाश का कंपना शामिल था, परन्तु योएल यह बताता है कि अंतिम दिनों के "चिन्ह"—वे दिन जब इस्राएल की अधर्मता ढूँढ़ी जाएगी और नहीं मिलेगी, जब परमेश्वर का पवित्र पर्वत सदा के लिए पवित्र होगा, क्योंकि कोई परदेसी फिर कभी उसमें से नहीं गुज़रेगा—स्वर्ग की शक्तियों के हिलने के साथ-साथ पृथ्वी की शक्तियों के हिलने को भी शामिल करेंगे। बहन व्हाइट स्वर्ग की शक्तियों के हिलने और पृथ्वी की शक्तियों के हिलने के बीच का भेद स्पष्ट करती हैं।

16 दिसंबर, 1848 को, प्रभु ने मुझे आकाश की शक्तियों के हिलने का दर्शन कराया। मैंने देखा कि मत्ती, मरकुस और लूका द्वारा लिखे गए चिन्ह बताते समय जब प्रभु ने 'आकाश' कहा, तो उनका अर्थ आकाश ही था, और जब उन्होंने 'पृथ्वी' कहा, तो उनका अर्थ पृथ्वी ही था। आकाश की शक्तियाँ सूर्य, चंद्रमा और तारे हैं; ये आकाश में शासन करते हैं। पृथ्वी की शक्तियाँ वे हैं जो पृथ्वी पर शासन करती हैं। परमेश्वर की वाणी से आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी। तब सूर्य, चंद्रमा और तारे अपने स्थानों से हटा दिए जाएँगे। वे नष्ट नहीं होंगे, परन्तु परमेश्वर की वाणी से हिला दिए जाएँगे।

काले, भारी बादल उभर आए और आपस में टकरा गए। आकाशमंडल दो भागों में बँटकर पीछे हट गया; तब हम ओरायन में बने खुले स्थान के माध्यम से ऊपर देख सकते थे, जहाँ से परमेश्वर का स्वर आया। पवित्र नगर उसी खुले स्थान से नीचे उतरेगा। मैंने देखा कि पृथ्वी की शक्तियाँ अब हिलाई जा रही हैं और घटनाएँ क्रमशः घटती हैं। युद्ध और युद्ध की अफवाहें, तलवार, अकाल और महामारी सबसे पहले पृथ्वी की शक्तियों को झकझोरेंगे; फिर परमेश्वर का स्वर सूर्य, चंद्रमा और तारों को, और इस पृथ्वी को भी, हिला देगा। मैंने देखा कि यूरोप में शक्तियों का हिलना, जैसा कि कुछ लोग सिखाते हैं, स्वर्ग की शक्तियों का हिलना नहीं है, बल्कि वह क्रोधित राष्ट्रों का हिलना है। प्रारंभिक लेखन, 41.

मत्ती, मरकुस और लूका में वर्णित "आकाश का कंपना" उन शक्तियों के कंपने का प्रतिनिधित्व करता है जो आकाश पर शासन करती हैं, जिन्हें सूर्य, चंद्रमा और तारों द्वारा दर्शाया गया है। ये सभी आकाशीय शक्तियाँ कंपित हुईं और उन्होंने वे "चिह्न" प्रकट किए, जिन्होंने पहले स्वर्गदूत के आंदोलन का आरंभ कराया और उसकी घोषणा की। उन आकाशीय शक्तियों को तीसरे स्वर्गदूत के आंदोलन के दौरान फिर से कंपाया जाएगा। परंतु तीसरे स्वर्गदूत के आंदोलन में पृथ्वी की शक्तियाँ भी कंपाई जाएँगी। पृथ्वी की शक्तियाँ वे हैं जो पृथ्वी पर शासन करती हैं। 11 सितंबर,

2001 को, आकाश की नहीं, बल्कि पृथ्वी की शक्तियाँ कंपित हुईं।

“क्या अब यह कहा जा रहा है कि मैंने यह घोषणा की है कि न्यूयॉर्क ज्वारीय लहर द्वारा बहा दिया जाएगा? यह मैंने कभी नहीं कहा। मैंने यह कहा है कि, जब मैं वहाँ एक के ऊपर एक उठती हुई उन विशाल इमारतों को देख रही थी, तब मैंने कहा, ‘जब प्रभु पृथ्वी को भयंकर रीति से कंपित करने के लिए उठ खड़ा होगा, तब कितने भयानक दृश्य घटित होंगे!’ तब प्रकाशितवाक्य 18:1-3 के वचन पूरे होंगे। प्रकाशितवाक्य का समस्त अठारहवाँ अध्याय इस बात की चेतावनी है कि पृथ्वी पर क्या आने वाला है। परन्तु न्यूयॉर्क पर विशेष रूप से क्या आने वाला है, इसके विषय में मुझे कोई विशेष प्रकाश नहीं मिला है; केवल इतना मैं जानती हूँ कि एक दिन वहाँ की वे विशाल इमारतें परमेश्वर की शक्ति के पलटने और उलटने से ढा दी जाएँगी। मुझे दिए गए प्रकाश से मैं जानती हूँ कि संसार में विनाश उपस्थित है। प्रभु का एक वचन, उसकी सामर्थ्यवान शक्ति का एक स्पर्श, और ये विशाल संरचनाएँ गिर पड़ेंगी। ऐसे दृश्य घटित होंगे जिनकी भयावहता की हम कल्पना भी नहीं कर सकते।” Review and Herald, July 5, 1906.

मिलराइट्स के इतिहास में, लूका द्वारा दर्ज किए गए चिन्तों में से एक था "राष्ट्रों का संकट"। राष्ट्र पृथ्वी पर शासन करने वाली शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, और 11 सितंबर, 2001 को, तीसरी विपत्ति भविष्यसूचक इतिहास में प्रवेश करते ही पृथ्वी का हर राष्ट्र हिल गया। वह सांसारिक हिलना लूका इक्कीस में दर्शाया गया था, परन्तु बाइबलीय अभिव्यक्ति "पृथ्वी की शक्तियों के हिलने" के रूप में नहीं। उसे "राष्ट्रों का संकट" वाक्यांश द्वारा व्यक्त किया गया था, जैसा कि तब विश्व के राष्ट्रों पर आया जब न्यूयॉर्क की विशाल इमारतें ढहा दी गईं। लूका में "राष्ट्रों का संकट" पृथ्वी की शक्तियों के हिलने का ही संकेत है, और यह मिलराइट्स के इतिहास में पूरा हुआ।

"मैंने देखा कि पृथ्वी की शक्तियाँ अब कंपित की जा रही हैं और घटनाएँ क्रमबद्ध रूप से घटित हो रही हैं। युद्ध और युद्ध की अफवाहें, तलवार, अकाल और महामारी सबसे पहले पृथ्वी की शक्तियों को कंपा देंगी; फिर परमेश्वर की वाणी सूर्य, चंद्रमा और तारों को, और इस पृथ्वी को भी, कंपा देगी। मैंने देखा कि यूरोप में शक्तियों का यह कंप, जैसा कि कुछ सिखाते हैं, आकाश की शक्तियों का कंप नहीं है, बल्कि वह क्रोधित राष्ट्रों का कंप है।" Early Writings, 41.

"क्रोधित राष्ट्रों की शक्तियों का हिलना" पृथ्वी की "शक्तियों का हिलना" ही है, जैसा कि एडवेंटवाद के प्रारंभिक इतिहास में यूरोप की "शक्तियों के हिलने" से स्पष्ट होता है। यूरियाह स्मिथ ने यह पहचाना कि 1838 में यूरोप की शक्तियों को क्या हिला रहा था।

जैसे इस [छठी] तुरही की भविष्यवाणी की अवधि की शुरुआत पूर्व के ईसाई सम्राट द्वारा स्वेच्छा से शक्ति तुर्कों के हाथों में सौंप देने से हुई, वैसे ही हम उचित रूप से निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उसका समापन भी तुर्की सुल्तान द्वारा उसी शक्ति को स्वेच्छा से वापस ईसाइयों के हाथों में सौंप देने से चिन्हित होगा। 1838 में तुर्की मिस्र के साथ युद्ध में उलझ गया। मिस्रियों के पास तुर्की सत्ता को उखाड़ फेंक देने की प्रबल संभावना थी। इसे रोकने के लिए यूरोप की चार महाशक्तियाँ—इंग्लैंड, रूस, ऑस्ट्रिया और प्रूसिया—तुर्की सरकार को बनाए रखने हेतु हस्तक्षेप किया। तुर्की ने उनके हस्तक्षेप को स्वीकार कर लिया। लंदन में एक सम्मेलन हुआ, जिसमें मिस्र के पाशा मेहेमेत अली को प्रस्तुत किए जाने के लिए एक अल्टीमेटम तैयार किया गया। यह स्पष्ट है कि जब यह अल्टीमेटम मेहेमेत के हाथों में दिया जाएगा, तब ओटोमन साम्राज्य का भाग्य व्यावहारिक रूप से यूरोप की ईसाई शक्तियों के हाथों में सौंप दिया जाएगा। यह अल्टीमेटम 11 अगस्त 1840 के दिन मेहेमेत के हाथों में रखा गया! और उसी दिन सुल्तान ने उन चार शक्तियों के राजदूतों को एक पत्र भेजकर पूछा कि यदि मेहेमेत उनके प्रस्तावित शर्तों का पालन करने से इनकार कर दे तो क्या किया जाना चाहिए। उत्तर यह था कि उत्पन्न होने वाली किसी भी स्थिति को लेकर उन्हें घबराने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि उसके लिए उन्होंने प्रबंध कर रखा था। भविष्यवाणी की वह अवधि समाप्त हो गई, और उसी दिन मुस्लिम मामलों का नियंत्रण ईसाइयों के हाथों में चला गया, ठीक वैसे ही जैसे 391 वर्ष और 15 दिन पहले ईसाई मामलों का नियंत्रण मुसलमानों के हाथों में चला गया था। इस प्रकार दूसरी विपत्ति समाप्त हुई, और छठी तुरही का बजना थम गया। उरियाह स्मिथ, सिनॉप्सिस ऑफ

प्रेज़ेंट ट्यूथ, 218.

दूसरी विपत्ति का इस्लाम अपनी शक्ति के शिखर को पार कर चुका था, जो कि परमेश्वर के वचन के अनुसार तीन सौ इक्यानवे वर्ष और पंद्रह दिन तक चलना था। फिर भी 1830 के दशक में मिस्र, मुस्लिम इतिहास के दूसरे महान जिहाद को जारी रखने के उद्देश्य से, मिस्र में एक खिलाफत को फिर से स्थापित करने का प्रयास कर रहा था। अधिक इस्लामी युद्ध की संभावना यूरोपीय शक्तियों को भय से कंपा रही थी। कई दशकों तक, इस्लाम द्वारा अपने युद्ध को फिर से भड़काने के इस संकट को उन वर्षों के इतिहासकारों और संवाददाताओं ने "पूर्वी प्रश्न" का नाम दिया। पूर्व के लोगों का युद्ध सदियों तक यूरोप के उन राष्ट्रों के विरुद्ध चलता रहा, जिनका धर्म रोमन चर्च से निकला था। 1838 में, मसीह द्वारा उल्लिखित "जातियों का संकट" उन क्रोधित राष्ट्रों की डगमगाहट का प्रतिनिधित्व करता था, जो इस्लाम द्वारा भूतपूर्व रोमन साम्राज्य के विरुद्ध लाए गए युद्ध के कारण उत्पन्न हुई थी।

महान नदी यूफ्रेटीस में बंधे हुए चार स्वर्गदूतों को [मुक्त करने] से, मेरी समझ में इसका अर्थ यह है कि ईश्वर अब उन चार प्रमुख राष्ट्रों को, जिनसे उस्मानी साम्राज्य बना था—जिन्होंने व्यर्थ ही कॉन्स्टेंटिनोपल में पूर्वी साम्राज्य को वश में करने का प्रयत्न किया था और यूरोप को जीतने में बहुत कम प्रगति की थी—अब कॉन्स्टेंटिनोपल पर कब्जा करने, और यूरोप के एक-तिहाई भाग पर आक्रमण कर उसे अधीन करने की अनुमति देने वाले थे; और ऐसा ही पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य के आसपास हुआ था। विलियम मिलर की कृतियाँ, खंड 2, 121.

लूका के वर्णन में राष्ट्रों का संकट "भ्रम के साथ; समुद्र और लहरों का गरजना," और मनुष्यों के "भय से हृदय बैठ जाना, और उन बातों की आशंका करना जो पृथ्वी पर आने वाली हैं" था। पूर्वी प्रश्न की उलझन बीसवीं शताब्दी तक विश्व की शक्तियों को विचलित करती रही, और उस संकट का प्रतीक था "भय से मनुष्यों के हृदय बैठ जाना" और "समुद्र और लहरों का गरजना।"

"यह परमेश्वर के सेवकों पर की जाने वाली वही मुहरबंदी है, जो यहजेकेल को दर्शन में दिखाई गई थी। यूहन्ना भी इस अत्यन्त विस्मयकारी प्रकाशन का साक्षी रहा था। उसने समुद्र और उसकी लहरों को गर्जना करते देखा, और मनुष्यों के हृदय भय के कारण विफल होते हुए देखे। उसने पृथ्वी को हिलते हुए, और पर्वतों को समुद्र के बीच में डाले जाते हुए देखा (जो शाब्दिक रूप से घटित हो रहा है), उसके जल को गरजते और उद्वेलित होते हुए, और पर्वतों को उसके उफान से कांपते हुए देखा। उसे विपत्तियाँ, महामारी, अकाल, और मृत्यु को अपना भयानक कार्य पूरा करते हुए दिखाया गया।" Testimonies to Ministers, 445.

जब यूहन्ना को एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी दिखाई गई, तब उसने राष्ट्रों की व्याकुलता देखी, जिसे समुद्र और लहरों का गरजना तथा भय के कारण लोगों के हृदयों का टूट जाना दर्शाते हैं; और यह वही मुहरबंदी थी जो यहजेकेल को नौवें अध्याय में दिखाई गई थी। यहजेकेल को मुहरबंदी के आंतरिक तत्व दिखाए गए, और यूहन्ना को मुहरबंदी से संबंधित बाहरी तत्व दिखाए गए। यूहन्ना ने देखा कि राष्ट्रों का भड़कना एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी से जुड़ा है, और राष्ट्रों का यही भड़कना लूका में वर्णित 'राष्ट्रों की व्याकुलता' भी है, जिसे ऐतिहासिक रूप से 'पूर्वी प्रश्न' के रूप में पहचाना जाता है। यूहन्ना को दिखाया गया कि तीसरी 'हाय' का इस्लाम, एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी का बाहरी चिन्ह है।

"वर्तमान समय सब जीवित लोगों के लिए अत्यंत गंभीर रुचि का समय है। शासक और राजनेता, विश्वास और अधिकार के पदों पर आसीन पुरुष, तथा सभी वर्गों के विचारशील स्त्री-पुरुष, अपने चारों ओर घटित हो रही घटनाओं पर अपना ध्यान लगाए हुए हैं। वे उन तनावपूर्ण और अशांत संबंधों को देख रहे हैं जो राष्ट्रों के बीच विद्यमान हैं। वे उस तीव्रता को देखते हैं जो प्रत्येक सांसारिक तत्त्व पर अधिकार करती जा रही है, और वे पहचानते हैं कि कोई महान और निर्णायक घटना घटित होने ही वाली है—कि संसार एक महानतम संकट के कगार पर है।

"स्वर्गदूत अब संघर्ष की वायुओं को थामे हुए हैं, ताकि वे तब तक न चलें जब तक संसार को उसके आने वाले विनाश के विषय में चेतावनी न दे दी जाए; परन्तु एक तूफ़ान एकत्र हो रहा है, जो पृथ्वी पर फूट पड़ने को तैयार

है; और जब परमेश्वर अपने स्वर्गदूतों को वायुओं को छोड़ देने की आज्ञा देगा, तब ऐसा संघर्ष का दृश्य उपस्थित होगा, जिसका चित्रण कोई लेखनी नहीं कर सकती।"

"बाइबल, और केवल बाइबल ही, इन बातों का सही दृष्टिकोण प्रदान करती है। यहाँ हमारे संसार के इतिहास के महान अंतिम दृश्य प्रकट किए गए हैं—ऐसी घटनाएँ जो पहले ही अपनी छाया आगे डाल रही हैं; उनके आगमन की आहट से पृथ्वी काँप उठती है और भय के कारण मनुष्यों के हृदय चूक जाते हैं।" शिक्षा, 179, 180.

लूका अध्याय 21 में यीशु ने उन "चिन्हों" की पहचान की जो मिलराइट आंदोलन की शुरुआत का कारण बने, और सिस्टर वाइट के अनुसार वे सभी "चिन्ह" पूरे हो चुके हैं। लिस्बन का भूकंप, अंधकारमय दिन, सितारों का गिरना, और "राष्ट्रों का क्लेश"—जो पृथ्वी की शक्तियों के हिल जाने का प्रतिनिधित्व करता था और जो "पूर्वी प्रश्न" से उत्पन्न भय के माध्यम से इस्लाम द्वारा पूरा हुआ—ये सब पूरे हो चुके हैं। मिलराइट "चिन्हों" में "मनुष्य का पुत्र का बादल के साथ आना" भी शामिल है, जो उसी क्रम में पूरा हुआ जिसमें ये "चिन्ह" मसीह ने दिए थे; क्योंकि 1840 में उस्मानी प्रभुत्व पर अंकुश लगने के साथ राष्ट्रों का क्लेश समाप्त होने के बाद, 22 अक्टूबर, 1844 को मसीह अति पवित्र स्थान में आए, और जब वे आए तो वे बादलों के साथ आए।

'और देखो, मनुष्य-पुत्र के समान एक स्वर्ग के बादलों के साथ आया, और वह अनादि-कालीन के पास आया, और उसे उसके सम्मुख ले आए। और उसे प्रभुत्व, महिमा और राज्य दिया गया, ताकि सब लोग, जातियाँ और भाषाएँ उसकी सेवा करें; उसका प्रभुत्व अनन्तकालीन प्रभुत्व है, जो कभी समाप्त नहीं होगा।' दानियेल 7:13, 14। यहाँ वर्णित मसीह का आगमन पृथ्वी पर उनका दूसरा आगमन नहीं है। वह स्वर्ग में अनादि-कालीन के पास प्रभुत्व, महिमा और राज्य प्राप्त करने के लिए आते हैं, जो उन्हें मध्यस्थ के रूप में अपने कार्य के अंत में दिया जाएगा। यही आगमन—और पृथ्वी पर उनका दूसरा advent नहीं—भविष्यवाणी में 1844 में 2300 दिनों की समाप्ति पर होने के रूप में बताया गया था। स्वर्गदूतों के साथ, हमारे महान प्रधान याजक परमपवित्र स्थान में प्रवेश करते हैं और वहाँ परमेश्वर की उपस्थिति में प्रकट होते हैं, ताकि मनुष्यों की ओर से अपनी याजकीय सेवा के अंतिम कार्यों में प्रवृत्त हों—अन्वेषणात्मक न्याय का कार्य करने और उन सब के लिए प्रायश्चित्त करने के लिए जिन्हें उसके लाभों के अधिकारी ठहराया गया है। महान संघर्ष, 479।

मिलरवादियों के इतिहास से जुड़े "चिन्ह" एक लाख चवालीस हजार के इतिहास से जुड़े "चिन्हों" के प्रतिरूप थे। जब मसीह ने दृष्टान्त के द्वारा उस ऐतिहासिक वर्णन की दूसरी गवाही दी, तो उन्होंने अपने शिष्यों का ध्यान "वसंत में कौपलें निकालते पेड़ों" की ओर दिलाया। उन्होंने उन्हें बताया कि जब पेड़ों में कौपलें फूटने लगती हैं तो तुम जानते हो कि तुम संसार के अंत के निकट हो, और वह पीढ़ी जो वसंत में कौपलें निकालते पेड़ों की साक्षी बनेगी, जीवित रहकर उसके दूसरे आगमन की ज्वालाओं में आकाश और पृथ्वी के टल जाने को देखेगी।

जब वे अब कौपलें निकालते हैं, तो तुम स्वयं देखकर जान लेते हो कि अब ग्रीष्म निकट है। उसी प्रकार, जब तुम इन बातों को घटित होते देखो, तो जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट है। मैं तुम से सच कहता हूँ, जब तक ये सब बातें पूरी न हो जाएँ, यह पीढ़ी नहीं बीतेगी। आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरे वचन कभी नहीं टलेंगे। लूका 21:30-33.

तब प्रश्न यह होता है, "कब से पेड़ों में नई कौपलें फूटने लगीं?" अंतिम वर्षा 11 सितंबर, 2001 को फुहारें पड़ने लगीं, जो यशायाह के अनुसार परमेश्वर की "पूर्वी पवन के दिन की कठोर पवन" का "दिन" है।

माप-माप करके, जब वह फूटेगा, तू उससे वाद-विवाद करेगा; वह पूर्वी पवन के दिन अपनी कठोर वायु को रोक रखता है। अतः इसी से याकूब का अधर्म शुद्ध किया जाएगा; और उसका पाप दूर करने का सारा फल यही है: कि जब वह वेदी के सब पत्थरों को ऐसे चूना-पत्थर कर देगा जो टुकड़े-टुकड़े करके कूटे गए हों, तब उपवन और प्रतिमाएँ फिर खड़ी न रहेंगी। तथापि किलेबंद नगर उजाड़ होगा, और निवास-स्थान त्यक्त होकर जंगल के समान छोड़ दिया जाएगा; वहाँ बछड़ा चरेगा, वहीं लेट जाएगा, और उसकी डालियाँ खा जाएँगी। जब उसकी डालियाँ सूख जाएँगी, तब वे तोड़ी जाएँगी; स्त्रियाँ आएँगी और उन्हें आग में झोंकेंगी; क्योंकि यह समझहीन लोग हैं;

इसलिए जिसने उन्हें बनाया वह उन पर दया न करेगा, और जिसने उन्हें रचा वह उन्हें अनुग्रह न दिखाएगा। और उस दिन ऐसा होगा कि प्रभु नदी की धारा से लेकर मिस्र की धारा तक झाड़ेगा, और हे इस्राएल के पुत्रों, तुम एक-एक करके बटोरे जाओगे। और उस दिन यह होगा कि बड़ा नरसिंगा फूँका जाएगा; और जो अशशूर देश में नाश के निकट थे, और जो मिस्र देश में निर्वासित थे, वे आकर यरूशलेम में पवित्र पर्वत पर प्रभु की आराधना करेंगे। यशायाह 27:8-13.

अंतिम वर्षा का छिड़काव (मापा हुआ) 11 सितम्बर, 2001 को प्रारम्भ हुआ, और अंतिम वर्षा के संदेश तथा नकली "शांति और सुरक्षा" के संदेश के विषय में बहस शुरू हुई। उस बहस का इतिहास वही है जहाँ याकूब का अधर्म दूर किया जाता है (शुद्ध किया जाता है, अर्थात् प्रायश्चित्त किया जाता है)। उस बहस का इतिहास, जो हबक्कूक की बहस है, एक लाख चवालीस हजार के मुहरबंद किए जाने का काल है, जो इस पर समाप्त होता है कि लाओदीकिया के सप्तम-दिवसीय ऐडवेंटिस्ट को प्रभु के मुख से उगल दिया जाएगा, क्योंकि वह "सुरक्षित नगर" होकर भी उजाड़ हो जाएगा, क्योंकि वह ऐसे लोगों का नगर बन चुका था जिनमें समझ नहीं है, जो न दया पाते हैं न कृपा। उसी समय प्रकाशितवाक्य अठारह की "दूसरी आवाज़" एक बड़ी तुरही फूँकेगी, जो सातवीं तुरही और तीसरा हाथ है, और परमेश्वर का अन्य झुंड "यरूशलेम" में आकर आराधना करेगा, जो तब विजयी कलीसिया का आंदोलन बन चुका होगा।

11 सितंबर, 2001 यह दर्शाता है कि पृथ्वी के इतिहास की अंतिम पीढ़ी आ गई है, और केवल वे ही जो वसंत में कौंपलाते पेड़ों के संकेत को पहचानते हैं, उस वर्षा को प्राप्त करेंगे जो पेड़ों में कौंपलें निकलने का कारण बन रही है। केवल वे ही, जो यह पहचानते हैं कि तीसरी विपत्ति का इस्लाम ही अंतिम वर्षा के आगमन और एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी का संकेत है, उसी समूह में होंगे।

"केवल वे ही जो अपने पास के प्रकाश के अनुरूप जीवन जीते हैं, और अधिक प्रकाश प्राप्त करेंगे। जब तक हम सक्रिय ईसाई सद्गुणों के आचरण में प्रतिदिन प्रगति नहीं कर रहे हैं, हम अंतिम वर्षा में पवित्र आत्मा की अभिव्यक्तियों को पहचान नहीं पाएँगे। संभव है कि वह हमारे चारों ओर के हृदयों पर बरस रही हो, परन्तु हम न तो उसे पहचानेंगे और न ही उसे ग्रहण करेंगे।" Testimonies to Ministers, 507.

"हमें अंतिम वर्षा की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। वह उन सब पर आने वाली है जो हम पर गिरती अनुग्रह की ओस और बौछारों को पहचानते और अपनाते हैं। जब हम प्रकाश की बिखरी किरणों को समेटते हैं, जब हम परमेश्वर की अटल करुणाओं की कद्र करते हैं, जिसे यह प्रिय है कि हम उस पर भरोसा रखें, तब हर प्रतिज्ञा पूरी होगी। 'क्योंकि जैसे पृथ्वी अपने अंकुर उगाती है, और जैसे बगीचा उसमें बोई हुई वस्तुओं को अंकुरित करता है; वैसे ही प्रभु यहोवा सब जातियों के सामने धर्म और स्तुति को अंकुरित करेगा' (यशायाह 61:11)। सम्पूर्ण पृथ्वी परमेश्वर की महिमा से भर दी जाएगी।" सेवेंथ-डे ऐडवेंटिस्ट बाइबल कमेंटरी, खंड 7, 984.

हम अगले लेख में अध्ययन जारी रखेंगे।

"जब तक वे लोग जो सहायता कर सकते हैं—अपने कर्तव्य की भावना से जागृत नहीं होते, तब तक जब तीसरे स्वर्गदूत की ऊँची पुकार सुनी जाएगी, वे परमेश्वर के कार्य को नहीं पहचानेंगे। जब प्रकाश पृथ्वी को प्रकाशित करने के लिए निकलेगा, तो प्रभु की सहायता के लिए आगे आने के बजाय, वे अपने संकीर्ण विचारों के अनुकूल बनाने हेतु उसके कार्य पर बंधन लगाना चाहेंगे। मैं तुम्हें बता दूँ कि इस अंतिम कार्य में प्रभु सामान्य व्यवस्था से बहुत हटकर, और किसी भी मानव योजना के विपरीत ढंग से काम करेगा। हमारे बीच ऐसे लोग होंगे जो हमेशा परमेश्वर के कार्य को नियंत्रित करना चाहेंगे, यहाँ तक कि यह भी निर्देश देंगे कि कौन से कदम उठाए जाएँ, जब यह कार्य उस स्वर्गदूत के निर्देशन में आगे बढ़ेगा जो संसार को दिए जाने वाले संदेश में तीसरे स्वर्गदूत के साथ जुड़ता है। परमेश्वर ऐसे तरीकों और साधनों का उपयोग करेगा जिनसे यह दिखाई देगा कि वह लगाम स्वयं अपने हाथों में ले रहा है। उसके धार्मिकता के कार्य को घटित करने और सिद्ध करने के लिए वह जिन सरल साधनों का उपयोग करेगा, उनसे कार्यकर्ता आश्चर्यचकित हो जाएँगे।" मंत्रियों के लिए साक्ष्य, 300.